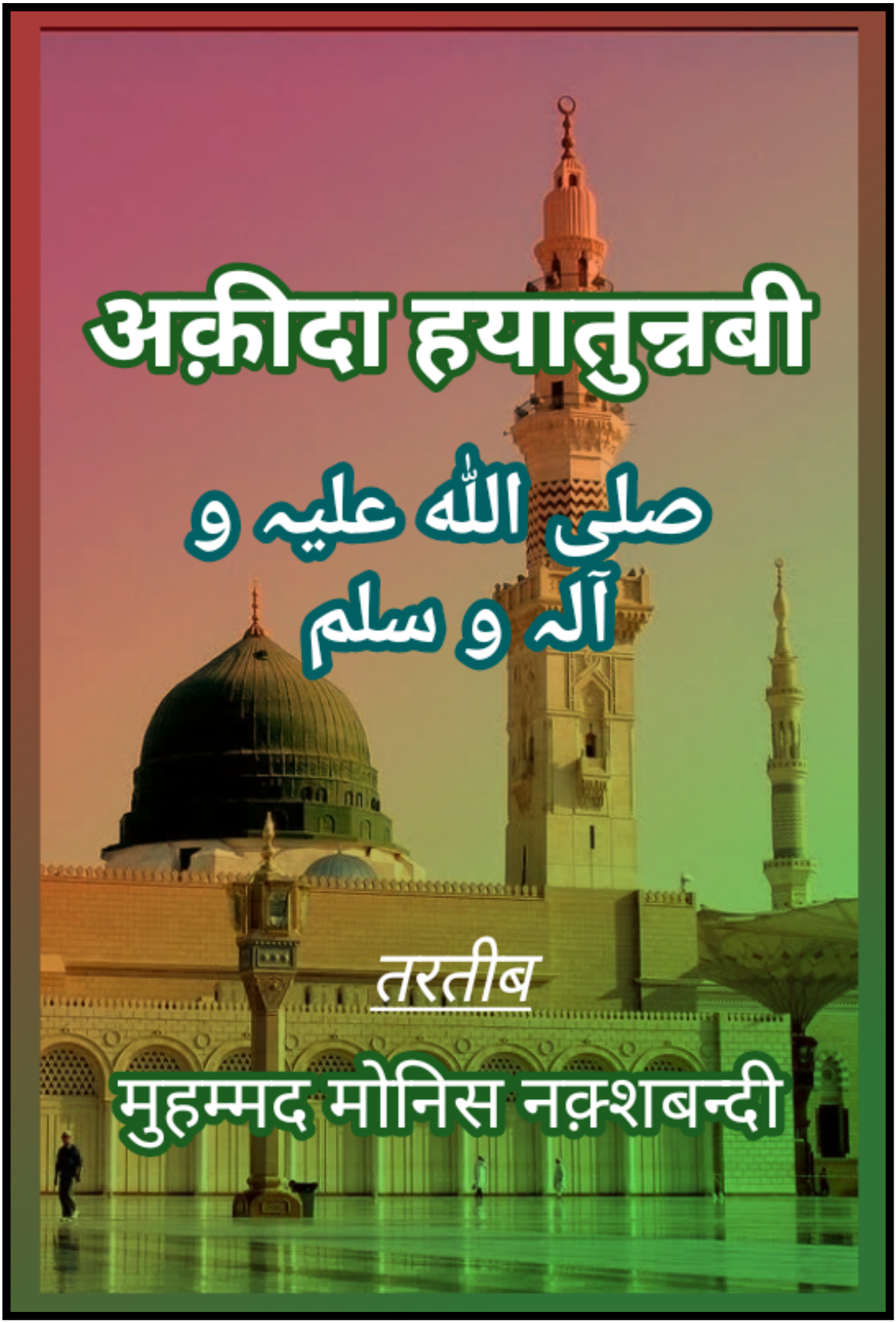
अक़ीदा हयातुन्नबी
صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم
तरतीब
मुहम्मद मोनिस नक़्शबन्दी

अक़ीदा हयातुन्नबी ﷺ एक ऐसा अहम अक़ीदा है जो हर मुसलमान के दिल में होना चाहिए , क्योंकि यह अक़ीदा क़ुरआन व हदीस से साबित है । और इस अक़ीदे पर इज्मा भी है ।
अक़ीदा हयातुन्नबी ﷺ क्या है ?

अक़ीदा मज़बूत यक़ीन का नाम है जिसमें किसी शक व शुबह की गुंजाइश न हो , आसान ज़बान में ईमान भी कह सकते हैं जैसे - कब्र , हश्र, जन्नत -जहन्नम पर हमारा ईमान है ।

हयात कहते हैं ज़िन्दगी को तो हयातुन्नबी ﷺ के मानी हैं नबी ﷺ की ज़िन्दगी,

यानी हमारा अक़ीदा होना चाहिए कि आप ﷺ ज़िन्दा हैं , बल्कि तमाम अम्बिया अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं , लेकिन याद रहे ये ज़िन्दगी दुनियवी ज़िन्दगी नहीं बल्कि बर्ज़खी ज़िन्दगी है , यानी आप ﷺ अपने रौज़ा ए मुबारक में

ज़िंदा हैं , और इसका सुबूत क़ुरआन व हदीस से मिलता है - आइए नज़र डालते हैं दलाईल पर -

● क़ुरआन से सुबूत -

अल्लाह तआला का इर्शाद है -

● और जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हों उन को मुर्दा न कहो , दरअसल वो ज़िन्दा हैं मगर तुम को (उन की ज़िन्दगी का) एहसास नहीं होता ।
[सूरः बक़रह आयत नं. 154]

● इस आयत में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने शहीद को ज़िन्दा फ़रमाया है , हदीस ए मुबारक से ये बात साबित है कि नबी ए करीम ﷺ शहीद हो कर फ़ौत हुए हैं । जिस तरह ये आयत शहीद के बारे में है उसी तरह नबी ए करीम ﷺ शहीद बन कर इस आयत की खुशखबरी में शामिल हैं ।

○ आप ﷺ के शहीद होने का सुबूत ।

1》 हज़रत आएशा रज़ि. फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अय्याम ए मर्ज़ुल वफ़ात (यानी वफ़ात के दिनों) में फ़रमाया कि जो ज़हरीला खाना मैंने ख़ैबर में खाया था , अब मैं उस खाने की तकलीफ़ महसूस कर रहा हूं , पस ये वक़्त मेरी कमर की रग कटने का है । [सही बुखारी जिल्द 2 , सफ़ा 637]

● लिहाज़ा आप ﷺ की वफ़ात का सबब यही ज़हर है इसलिए आप ﷺ शहीद भी हुए ।

2》 हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं 9 दफ़ा क़सम उठाऊं कि रसूलुल्लाह ﷺ शहीद हुए मुझे इस बात से ज़्यादा पसंद है कि मैं एक दफ़ा क़सम उठाऊं (और बात पक्की करूं) कि रसूलुल्लाह ﷺ (किसी काफ़िर के हाथ तलवार के साथ) क़त्ल नहीं किये गये, और ये इस लिए कि

अल्लाह तआला ने हुज़ूर ﷺ को नबी भी बनाया और शहीद भी बनाया ।
[मुस्तदरक जिल्द 3 सफ़ा 60-61 , हदीस नं. 4394-98]

● इस हदीस से भी शहादत का सुबूत मिलता है ।

2》 हदीस से सुबूत -

1》 अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जिस रात मुझे मेराज का सफ़र कराया गया तो मैंने हज़रत मूसा अलैस्सलाम को सुर्ख टीले के क़रीब उन की क़ब्रें खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हुए देखा ।
[सही मुस्लिम जिल्द 2 , सफ़ा 288 हदीस नं. 6158]

● हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं और इस सहीह हदीस से साबित हुआ कि

वफ़ात के बाद अल्लाह तआला ने उन को क़ब्र मुबारक में ज़िन्दगी अता फ़रमायी ।

2》 हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि हज़रात ए अम्बिया अलैहिमुस्सलाम अपनी क़बरों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं । [मुस्नद ए अबी या'ला जिल्द 6 सफ़ा 147 , हदीस नं. 3425]

● वो मुहद्दिसीन जिन्होंने इस हदीस की सनद को सहीह कहा :-
1 - हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह. ने (फ़त्हुल बारी , जिल्द 6 , सफ़ा 352)
2- मुल्ला अली क़ारी रह. (मिरक़ात जिल्द 2 , सफ़ा 212)
3- अल्लामा हैसमी रह. ने मजमउज़्ज़वायद में ,
4- अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह. ने फ़ैज़ुल बारी में ,
5- अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह. ने फ़त्हुल मुल्हिम में ,

6- शेखुल हदीस मौलाना ज़करिया रह. ने फ़ज़ाइल ए दुरूद सफ़ा 18 और 34 पर लिखा है ।

3》 हज़रत आएशा रज़ि. से रिवायत है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. नबी ए अकरम ﷺ के फ़ौत होने के बाद आप ﷺ की चारपाई के नज़दीक तशरीफ़ लाये और आप ﷺ का माथा चूम कर फ़रमाया -

- بابی انت و امی طبت حیا و میتا و الذی نفسی بیده لا یذیقک الله المئتتین ابدا.

मेरे मां बाप क़ुरबान हो जाएं कि आप ﷺ ने अच्छी ज़िन्दगी पायी और अच्छी वफ़ात पायी , फ़िर लोगों के पास आकर ख़ुतबा दिया और नबी ए करीम ﷺ की वफ़ात का कर के फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि आप ﷺ पर दो मौतें नहीं आएंगी ।
[सही बुखारी, जिल्द 1 , सफ़ा 517]

तशरीह : एक मौत तो आप ﷺ पर आ चुकी है और अब वो दूसरी मौत कौन सी है जो हुज़ूर ए पाक ﷺ पर नहीं आएगी ?
मुहद्दिसीन ए किराम ने इस हदीस की तशरीह में फ़रमाया -

● والاحسن ان یقال ان حیاتہ ﷺ لا یتعقبھا موت بل یستمر حیا والانبیاء احیاء فی قبورہم

● जिसका तर्जुमा ये है - बेहतरीन तफ़सीर यही है की हुज़ूर ए पाक ﷺ की क़ब्र की ज़िन्दगी पर दोबारा मौत नहीं आएगी, बल्कि अब आप हमेशा ज़िन्दा रहेंगे जिस तरह बाक़ी अम्बिया ए किराम (अलैहिमुस्सलाम) अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं ।
[हाशिया सही बुखारी, किताबुल मनाक़िब , बाब अबी बक्र रज़ि. जिल्द 1 सफ़ा 517]

● हाशिया सही बुखारी बानी दारुल उलूम देवबंद हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह. के उसताज़ मुहद्दिस ए कबीर हज़रत मौलाना अहमद अली सहारनपुरी रह. ने लिखा है, और यही तशरीह हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह. ने फ़त्हुलबारी जिल्द 6 सफ़ा 511 , और अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी रह. ने उम्दतुलक़ारी जिल्द 6 सफ़ा 601 पर बयान किया है ।

4》 हज़रत औस बिन औस रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जुमा का दिन तमाम दिनों से अफ़ज़ल है , इसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और फ़ौत हुए , इसी दिन क़यामत का पहला सूर फूंका जायेगा फ़िर इसी दिन आखिरी सूर फूंका जायगा , तो तुम मेरे ऊपर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद पढ़ा करो बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाएगा, सहाबा ए किराम रज़ि. ने पूछा आप ﷺ के फ़ौत होने के बाद हमारा दुरूद आप ﷺ पर कैसे पेश होगा ?

हालांकि आप ﷺ तो मिट्टी मिट्टी हो चुके होंगे , तो आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वो अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के अजसाम ए मुबारका (जिस्म मुबारक) को खा सके । [सुनन माजा 1085 सहीह ,मिश्कातुल मसाबीह : 1334, 1338 , दारमी , बहक़ी अबू दाऊद शरीफ़ , जिल्द 1 , सफ़ा 150]

● इस हदीस ए पाक से साबित हुआ कि दुरूद शरीफ़ आप ﷺ के जिस्म पर पेश की जाती है , और ये नबी ए करीम के ज़िन्दा होने की दलील है ।

● बाज़ लोग धोखा देने के लिए कहते हैं कि हम हयातुन्नबी ﷺ को मानते हैं लेकिन जिस्म को ज़िंदा नहीं मानते (نعوذباللہ) रूह को ज़िंदा मानते हैं , अब देखें यहां साफ - साफ साबित होता है कि दुरूद जिस्म ए मुबारक पर पेश होता है, अगर सिर्फ रूह पर होता तो ये बात तो सहाबा ए किराम रज़ि. को भी पता

थी , कि रूह ज़िंदा रहती है , इसीलिए सवाल जिस्म ए मुबारक के मुताल्लिक़ किया । इस पर आप ﷺ ने सराहत कर दी की अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का जिस्म को ज़मीन नहीं खा सकती ।

● हयात तो कहते ही है जिस्म का रूह के साथ ताल्लुक़ होने को लेकिन मुन्किरीन ए हयातुन्नबी ﷺ इसके मुन्किर हैं , जब रूह का ताल्लुक जिस्म से न मानें तब इसे हयात नहीं ममात कहा जाता है , अल्लाह हिदायत दे । आमीन ।

3》 इज्मा -
अक़ीदा हयातुन्नबी ﷺ पर सहाबा ए किराम रज़ि. के दौर से आज तक इज्मा चला आ रहा है ।

● इज्मा , उम्मत ए मुस्लिमा के इत्तेफाक़ी फ़ैसले को कहा जाता है, इज्मा ए उम्मत को मानना बहुत ज़रूरी है, इज्मा ए उम्मत के इन्कार कर देने पर बाज़ सूरतों में बन्दा

काफ़िर हो जाता है, और बाज़ सूरतों में बन्दा काफ़िर तो नहीं होता मगर फ़ासिक़ यानी इन्तिहायी गुनहगार और बिदअती हो जाता है।

1》 मुक़्तदिर आलिम ए दीन हज़रत अल्लामा शमसुद्दीन सख़ावी रह. फ़रमाते हैं - हमारा ईमान है और हम इस बात की तस्दीक़ करते हैं कि हुज़ूर ए पाक ﷺ अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं और आप को वहां रिज़्क़ भी मिलता है , और आप ﷺ के जस्द ए अतहर को मिट्टी नहीं खा सकती , और इस अक़ीदे पर पूरी दुनिया के मुसलमान मुत्तफ़िक़। हैं । [क़ौलुल बदीअ , सफ़ा 172]

2》 अज़ीम मुहद्दिस , मुफ़स्सिर ए क़ुरआन अल्लामा जलालुद्दुन सुयूती रह. फ़रमाते हैं - हमारे नबी ﷺ समेत तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं - बेशक उनकी क़ब्र मुबारक में ज़िन्दगी यक़ीनी दलाईल से साबित है और इसी अक़ीदा हयातुन्नबी पर ख़बर ए मुतावातिर (इज्मा) भी क़ायम है ।

3》 मुफ़्ती ए आज़म हिन्द हज़रत मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह देहलवी रह. फ़रमाते - नबी ए करीम ﷺ अपनी क़ब्र ए मुबारक में ज़िन्दा हैं जैसा कि अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब है ।
[किफ़ायतुल मुफ़्ती , जिल्द 1 , सफ़ा 169]

4》 हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह. फ़रमाते हैं - आप ﷺ क़ब्र ए मुबारक में ज़िंदा हैं क़रीब - क़रीब अहले हक़ इस पर मुत्तफ़िक़ हैं । सहाबा ए किराम रज़ि. का भी यही अक़ीदा है ।
दूसरी जगह है ये बात बा इत्तेफाक़ ए उम्मत से साबित है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं ।
[अशरफ़ुल जवाब , सफा 210-211]

● एक इशकाल का जवाब !

मुन्किरीन कहते हैं कि क़ुरआन में तो आया है

- اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۞

तर्जुमा - (ऐ पैग़ामबर) मौत तुम्हें भी आनी है और मौत उन्हें भी आनी है ।
[सूरः ज़ुमर , आयत नं. 30]

तो आप ﷺ की ज़िंदगी कहा से साबित हुई जब क़ुरआन खुद आप ﷺ की वफ़ात की खबर दे रहा ।
जवाब - ये दलील आप ﷺ के फ़ौत होने की है , ये तो हम सब ही मानते हैं कि आप ﷺ फ़ौत हुए , लेकिन उसके बाद अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं ।
मुन्किरीन क़ब्र की ज़िंदगी के भी मुन्किर हैं ।

● मुन्किरीन ए हयातुन्नबी ﷺ के बारे में फ़तवा -

मौजूदा उलमा ए देवबंद के पीरो मुर्शिद हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधियानवी शहीद रह. लिखते हैं कि : आप ﷺ अपने रौज़ा ए अतहर में ज़िंदा हैं , क़ब्र के करीब सलाम का

जवाब देते हैं , जो शख़्स इस के खिलाफ अक़ीदा रखता है , वो मेरे अकाबिर के नज़दीक गुमराह है ।

उस की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ना जाएज़ नहीं उसकी तक़रीर सुनना जाएज़ नहीं उसके साथ किसी किस्म का ताल्लुक रखना जाएज़ नहीं । [आप के मसाइल और उनका हल , जिल्द 1 , सफ़ा 299]

गुज़ारिश

तमाम दलाईल देखकर आपको अन्दाज़ा हुआ होगा कि ये अक़ीदा कितना ज़रूरी है, इसलिए खुद भी इस अक़ीदे को अपने अन्दर दाखिल करें और दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करें ।

जज़ाकल्लाहु ख़ैर ।

✒ मुहम्मद मोनिस नक़्शबन्दी